School of Education

Certificate

I hereby declare that the short synopsis "पतंजलि विश्वविद्यालय हरिद्वार:एक व्यष्टि अध्ययन" being submitted in partial fulfillment of the requirement for the degree of Doctor of Philosophy in Education under school of Education of U.P. Rajarshi Tandon Open University, Prayagraj during the academic year 2022-23.

It is a bonafide record of original work carried out under the supervision of Prof. P.K.Panday and has not been submitted in full or part to any other university or institute for a degree or diploma. Further, it is certified that the short synopsis is plagiarism-free and the repot has been submitted.

Research Supervisor

Prof.Chhatrasal Singh
School of Education

(Signature)

Kamlakant Tripathi
En.No.2200906

20.05.2025

Prof.P.K.Astalin
(Director School of Education)

20/05/25

Prof.P.K.Pandey

(Secretary of RDC/Director,R&D cell)

पतंजलि विश्वविद्यालय हरिद्वार : एक व्यष्टि अध्ययन

Patanjali Vishwavidalaya Haridwar : Ek Vyashti Adhyayan

शिक्षाशास्त्र विषय में डॉक्टर ऑफ फिलॉसफी की उपाधि हेतु आंशिक पूर्ति के लिए
उत्तर प्रदेश राजर्षि टंडन मुक्त विश्वविद्यालय, प्रयागराज
को प्रस्तुत

संक्षिप्त सारांशिका

शोध–निर्देशक

प्रोफेसर छत्रसाल सिंह
आचार्य

प्रस्तुतकर्त्ता

कमला कान्त त्रिपाठी
नामांकन सं0 2200906

शिक्षा विद्याशाखा

उत्तर प्रदेश राजर्षि टण्डन मुक्त विश्वविद्यालय,

शांतिपुरम, (सेक्टर–एफ) फाफामऊ, प्रयागराज –211021

अनुक्रमणिका

1. प्रस्तावना	2
2. शोध की आवश्यकता एवं महत्त्व	4
3. शोध की समस्या	6
4. समस्या कथन	6
5. अध्ययन का उद्‌देश्य	6
6. अध्ययन के मुख्य बिन्दु	7
7. सम्बन्धित साहित्य का सर्वेक्षण	8
8. शोध विधि	11
9. सूचना प्राप्ति के स्रोत	11
(1) प्राथमिक स्रोत	11
(2) द्वितीयक स्रोत	12
शोध की रूपरेखा	13
सन्दर्भ ग्रन्थ सूची	14

सारांशिका

प्रस्तुत शोध का विषय पतंजलि पतंजलि विश्वविद्यालय हरिद्वार से संबंधित है। किसी भी राष्ट्र भूतकाल, वर्तमान एवं भविष्य उस राष्ट्र में स्थापित शैक्षिक एवं युवा निर्माण संस्थाओं के संख्यात्मक एवं गुणात्मक स्थिति पर निर्भर करता है। विश्वविद्यालय औपचारिक शिक्षा प्राप्त करने की सर्वोच्च संस्था है। उच्च शिक्षा किसी भी युवा के जीवन की दिशा एवं दशा निश्चित करने का महत्वपूर्ण उपकरण होता है। उच्च शिक्षा का विकास वैदिक काल से आज तक विभिन्न चरणों में अनवरत चल रहा है। स्वतंत्र भारत के संविधान निर्माताओं ने भी शिक्षा को महत्वपूर्ण स्थान दिया। स्वतंत्र भारत की सरकारों ने भी समय–समय में उच्च शिक्षा में संख्यात्मक एवं गुणात्मक विकास का प्रयास किया। वर्तमान की आवश्यकता एवं भविष्य की संभव जरूरत को ध्यान में रखते हुए नई शिक्षा नीति 2020 में उच्च शिक्षा के क्षेत्र आमूल चूल परिवर्तन के साथ वैज्ञानिक सोच एवं शोध को महत्वपूर्ण स्थान देते हुए कौशल विकास को सर्वोच्च स्थान दिया गया। उच्च शिक्षा अधिक लचीला एवं उपयोगी बनाने के साथ ही तनाव रहित एवं वैयक्तिक भिन्नता को महत्वपूर्ण बनाया गया। पतंजलि विश्वविद्यालय हरिद्वार का उद्देश्य भी योग, आयुर्वेद, हर्बल, जैविक उत्पाद एवं अनेकानेक विधि से युवा वर्ग के शारीरिक, मानसिक, भावात्मक, सामाजिक एवं संकल्प शक्ति को दृढ़ कर सर्वांगीण विकास के साथ युवा एवं भारत का नव निर्माण है।

मुख्य बिंदु– विश्वविद्यालय, औपचारिक शिक्षा, नई शिक्षा नीति 2020, कौशल विकास, नव निर्माण।

प्रस्तावना–

भारतीय दर्शन का अति महत्त्वपूर्ण स्थान है, योग दर्शन जो कि सांख्य दर्शन का व्यवहारिक रूप है, उसका जीवन से घनिष्ठ सम्बन्ध है प्रत्येक राष्ट्र की उन्नति का आधार वहाँ की शिक्षा व्यवस्था है। व्यक्ति, समाज और राष्ट्र के निर्माण में शिक्षा की महत्त्वपूर्ण भूमिका रहती है। वह सर्वमान्य तथ्य है कि जहाँ की जैसी शिक्षा–व्यवस्था होगी, वैसा ही वहाँ का समाज तथा राष्ट्र होगा। किसी भी राष्ट्र की परम्परागत चिन्तनशीलता, मननशीलता एवं विचारशीलता का उसके समाज सुधारकों एवं दार्शनिक विचारकों की विशिष्ट प्रकाशमान परम्परा ने समय–समय पर उस देश की शिक्षा के लिए बहुत कुछ किया है। ऐसे ही विचारकों में महर्षि पतंजलि का नाम अत्यन्त गौरवपूर्ण रूप में स्मरण किया जाता है, उन्होंने भारतीय जनमानस मूलभूत शक्ति अष्टांग योग को ग्रहण कर अपने योग सिद्धान्त का प्रतिपादन किया। उन्होंने मानव जाति को ऐसा सूत्र दिया जिससे वह अपना सर्वांगीण विकास कर सकें।

आधुनिक युग में स्वामी विवेकानन्द और श्री अरविन्द ज्ञान प्राप्ति के लिए योग को सर्वोत्तम विधि मानते थे। विवेकानन्द ने ज्ञान को दो भागों में बाँटा है– वस्तु जगत का ज्ञान और आत्मतत्त्व का ज्ञान। वस्तु जगत के ज्ञान के लिए इन्होंने प्रत्यक्ष विधि पर बल दिया है और आत्म तत्त्व के ज्ञान के लिए अध्ययन एवं सत्संग पर श्री अरविन्द ने ज्ञान को दो भागों में बाँटा है– द्रव्यज्ञान और आत्मज्ञान। द्रव्यज्ञान (जगत् ज्ञान) को ये साधारण ज्ञान मानते थे और आत्मज्ञान को उच्च ज्ञान। इनकी दृष्टि से वस्तु जगत् का ज्ञान ज्ञानेन्द्रियों द्वारा और आत्मतत्त्व का ज्ञान अन्तःकरण द्वारा होता है। आत्मतत्त्व के ज्ञान के लिए ये योग की क्रिया को आवश्यक मानते है।

डॉ0 राधाकृष्णन ने कहा था कि, ''मन नही लगता है।'' यह आज के मनुष्य का आम रोग होगा, जिसका उपचार आज किसी भी चिकित्सा पद्धति के पास नहीं है। इस ज्वलन्त समस्या के लिए योग ही एकमात्र सर्वसुलभ समाधान है।

आज विश्व में चारों ओर ज्ञान–विज्ञान का प्रचार तेजी से हो रहा है। अतः पाश्चात्य व भारतीय विद्वानों की दार्शनिक विचारधारा पर आधारित शिक्षा दर्शन का विकास करना आज के युग की महत्त्वपूर्ण आवश्यकता है। महर्षि पतंजलि भारत के ऐस प्रथम दार्शनिक थे जिन्होंने मोक्ष की ज्ञानमूलक होने के सिद्धान्त की स्थापना कर एक नये युग का सूत्रपात किया था। महर्षि पतंजलि के दार्शनिक एवं शैक्षिक विचारों में भारतीय आदर्शों, मान्यताओं, प्रेरणाओं एवं सांस्कृतिक मूल्यों का समावेश पाया जाता है।

धार्मिक, सामाजिक, राष्ट्रीय एवं शैक्षिक क्षेत्रों का अपना व्यक्तित्व तथा कृतित्व से प्रभावित करने वाले पतंजलि का शैक्षिक अध्ययन केवल शोधकर्त्ता के शोध–क्षेत्र में ही मौलिक कार्य नहीं होगा, अपितु राष्ट्र शिक्षा व्यवस्था के निर्माण में योगदान करेगा। भारत जैसे देशों में जहाँ विभिन्न जातियाँ विविध धर्मों में विश्वास रखने वाले तथा अनेक प्रकार के मतावलम्बी रहते हैं, पतंजलि शिक्षा–दर्शन का अध्ययन सभी देशवासियों के मध्य सौहार्द एवं विश्वास का सृजन करेगा। आज जिस वर्ग–हीन, धर्मनिरपेक्ष एवं समाजवादी व्यवस्था की बात होती है वह योग–दर्शन की अभेद दृष्टि के द्वारा ही प्राप्त की जा सकती है। इसके लिए शिक्षा को योग दर्शन पर आधारित होना चाहिए।

जबकि पतंजलि रिसर्च फाउंडेशन की स्थापना 2010 में हुई थी, संस्थान में योग और आयुर्वेद पर शोध 2007 में शुरू हुआ। महर्षि पतंजलि (योगसूत्र के कथावाचक) के नाम पर पतंजलियोगपीठ की स्थापना 2006 में योग गुरु रामदेव द्वारा की गई थी। वर्तमान में पतंजलियोगपीठ ट्रस्ट द्वारा प्रबंधित, यह प्रदान करता है विभिन्न प्रकार की सेवाएँ और गतिविधियाँ, जिनमें अस्पतालों, प्रयोगशालाओं, अनुसंधान केंद्रों में आयुर्वेदिक उपचार और एक कैंटीन और एटीएम सहित अन्य सुविधाएं शामिल हैं। उपचार निश्चित रूप से पतंजलि योगपीठ में एक महत्वपूर्ण गतिविधि है, जिसमें 400 आंतरिक रोगियों के लिए प्रावधान है और जहां प्रत्येक दिन 50-200 बाह्य रोगी देखे जाते हैं। 40 योग्य आयुर्वेद चिकित्सकों द्वारा प्रतिदिन। रोगियों की आयु सीमा विस्तृत है, छोटे बच्चों से लेकर वृद्ध व्यक्तियों तक। सबसे अधिक देखी जाने वाली कुछ स्थितियां हैं मधुमेह, उच्च रक्तचाप, गठिया, एसिड–पेप्टिक रोग, बवासीर, साथ ही ऑटोइम्यून रोग, कैंसर और न्यूरोडीजेनेरेटिव विकार वाले व्यक्ति। बाह्य रोगी विभाग में आने वाले मरीजों को निःशुल्क आयुर्वेद परामर्श मिलता है। सुविधा में एक जैव रसायन प्रयोगशाला, रेडियोग्राफी और अल्ट्रासाउंड इकाई भी है ताकि समकालीन निदान तकनीकों को निदान के पारंपरिक तरीकों के साथ जोड़ा जा सके। आयुर्वेद सर्जरी के लिए भी रोगियों को भर्ती किया जाता है, विशेष रूप से बवासीर, फिस्टुला, हर्निया, रेक्टल प्रोलेप्स, पायलोनिडल साइनस और हाइड्रोसील के लिए। आयुर्वेद में शिक्षा यथासंभव व्यापक होनी चाहिए। पतंजलि आयुर्वेद कॉलेज की स्थापना 2009 में हुई थी, जिसमें हर साल 50 छात्र प्रवेश लेते थे। वर्तमान में, 122 छात्र हैं जिन्हें बी.ए.एम.एस. पाठ्यक्रम के पाठ्यक्रम और पाठ्यचर्या के आधार पर निर्देश दिए जाते हैं। छात्रों को जंगल में

उगने वाले औषधीय पौधों की पहचान करने के लिए क्षेत्रीय यात्राओं से भी अवगत कराया जाता है, समकालीन विज्ञान आयुर्वेद को कैसे देखता है यह समझने के लिए आने वाले वैज्ञानिकों के व्याख्यान, उन्हें यह देखने का भी मौका मिलता है कि पॉलीहर्बल तैयारी कैसे निर्मित की जाती है, और भारतीय से संबंधित प्रथाओं में प्रशिक्षण प्राप्त किया जाता है। पतंजलि विश्वविद्यालय (2006 में मान्यता प्राप्त और 2009 से चालू) पंचकर्म में 1 साल का स्नातकोत्तर डिप्लोमा पाठ्यक्रम भी संचालित करता है। आयुर्वेद दवाओं का निर्माण और वितरण, आउट पेशेंट और इनपेशेंट दोनों को विनिर्माण इकाई (दिव्य फार्मेसी) से जीवनशैली में बदलाव और पॉलीहर्बल तैयारी निर्धारित की जाती है। औषधीय पौधों (संख्या में 243) और उनके अर्क का उपयोग अन्य पदार्थों (उदाहरण के लिए, खनिज) के साथ पॉलीहर्बल तैयारी के निर्माण के लिए किया जाता है, जिसमें कॉस्मेटिक उपयोग के लिए कुछ भी शामिल हैं। एक हर्बल विश्वकोशसंस्था एक विस्तृत ''हर्बल विश्वकोश'' भी संकलित कर रही है दुनिया भर से 5500 औषधीय पौधे और भारत से 3500 औषधीय पौधे। प्रत्येक पौधे का वानस्पतिक नाम, वह नाम जिसके द्वारा इसे कई अन्य भाषाओं में जाना जाता है, इसके औषधीय उपयोग, इसके स्थान के साथ–साथ सटीक तस्वीरों और चित्रों का विस्तृत विवरण दिया जाएगा। हालांकि संकलनों की एक विस्तृत श्रृंखला उपलब्ध है, फिर भी इस विश्वकोश से अपेक्षा की जाती है कि वह वैद्यों द्वारा निर्धारित औषधीय पौधों के अलावा औषधीय पौधों के पारंपरिक उपयोग ('घरेलू उपचार' के रूप में प्रचलित) के बारे में जानकारी प्रदान करेगा।

अध्ययन की आवश्यकता एवं महत्व–

प्राचीन से लेकर आधुनिक पाश्चात्य शिक्षण परम्परा तक सम्पूर्ण जगत् शिक्षा की ओर उन्मुख रहा है। शिक्षक विद्यार्थी, अभिभावक, समाज सुधारक, गणनायक, व्यवस्थापक, राजनेता, मंत्री सभी शिक्षा को मानव को सर्वांगीण विकास में अत्यन्त उपयोगी कारक के रूप में स्वीकार करते हैं। जन्म के समय बालक असामाजिक प्राणी होता है, उसे सामाजिक सांस्कृतिक बनाने में शिक्षा की महत्ती भूमिका होती है, व कुछ सामाजिक समस्याओं के लिए शिक्षा की कमी कारण बनती है तो कुछ के लिए शिक्षा न ग्रहण कर पाने के कई आधार होते हैं। वर्तमान में शिक्षा का उद्देश्य केवल अच्छी डिग्रियों और अच्छे रोजगार की तलाश तक सीमित हो गया है। लेकिन शिक्षा का मूल उद्देश्य आज भूलते जा रहे हैं। वर्तमान समय की शिक्षा व्यवस्था में गुणवत्तापूर्ण शिक्षा

के निर्माण के लिए भारतीय एवं विदेशी शिक्षाविदों, समाजशास्त्रीयों एवं जननायकों की शिक्षा व्यवस्था का लागू करना चाहिए जिससे प्राचीन कालीन शिक्षा के उद्देश्यों का वर्तमान में लागू किया जा सके। वर्तमान शिक्षा पद्धति में हम अपने तरुणों को अनेकानेक विषयों का आधुनिकतम ज्ञान तो प्रदान करते हैं, किन्तु ब्रह्मचर्य एवं तपः साधना द्वारा चरित्र निर्माण का हमारे पाठ्यक्रम में कोई स्थान नहीं है।

अतः हमारी आज की शिक्षा बिना नींव का भव्य महल साबित हो रही है, जो काल एवं परिस्थितियों का हल्का झोंका भी नहीं सहन कर पाती। परिणामस्वरूप छात्र–जीवन में शीर्ष पर रहे अनेक डाक्टर, इंजीनियर, वैज्ञानिक, प्रशासक तथा राजनेता प्रायः भ्रष्टाचार में आकण्ठ डूबे मिलते हैं। समय की माँग है कि हम अपने ऋषियों द्वारा प्रणीत शिक्षा के आधार तत्त्वों को अपनी आज की शिक्षा पद्धति में समुचित स्थान देकर राष्ट्र के लिए चरित्रवान, गुणवान तथा तेजस्वी तरुणों का निर्माण कर सकते हैं।

आधुनिक युग में भी योग का नितान्त महत्त्व है क्योंकि अनेक प्रकार की शारीरिक एवं मानसिक व्याधियों से त्रस्त तथा लोभ–मोह आदि अनेक कुवासनाओं से ग्रसित समाज के लिए स्वास्थ्य लाभ का ऐकान्तिक उपाय यदि कोई है तो वह है – योग। योग करना सभी के लिए आवश्यक है। यह किसी जाति विशेष, वर्ग विशेष, धर्म विशेष, देश विशेष अथवा आश्रम विशेष के लिए नहीं है अपितु प्राचीन ऋषियों द्वारा अनुसंधान की गई एक विशेष जीवन सरणि है जिस पर चलकर मानव स्यवं पूर्णतः स्वस्थ रख सकता है। स्वस्थ मानव से ही स्वस्थ समाज का निर्माण सम्भव है और स्वस्थ समाज ही स्वस्थ ब्रह्माण्ड की कामना कर सकता है।

देश के अधिकतर विश्वविद्यालय 'योग शिक्षा' को शारीरिक विभाग के अन्तर्गत संचालित करते हैं जबकि वर्तमान में सभी विद्यालय एंव विश्वविद्यालय में 'योग शिक्षा' का अलग विभाग निर्मित करने पर बल दिया जाना चाहिए। जिससे योग विद्या एक संपूर्ण और स्वतंत्र विषय के रूप में उभर सके। यद्यपि केन्द्रिय विद्यालयों में भारत सरकार द्वारा योग के पाठ्यक्रमों को सम्मिलित करने की नीति बनाई गई है किन्तु उसे पूर्ण मनोयोग के साथ अपनाये जाने की आवश्यकता है जिससे वह मात्र औपचारिकता बन कर न रहें, उससे वास्तविक लाभ उठाया जा सके।

आज भारत को ऊँचाईयों पर ले जाने के लिए भारत में श्रेष्ठ विश्वविद्यालयों की जरूरत है। ऐसे विश्वविद्यालयों की स्थापना की जानी चाहिए जो परिस्थितियों के अन्तर्गत

उचित मानकों पर खरा उतरा सकें। ऐसे विश्वविद्यालयों की स्थापना हेतु हमें प्राचीन काल के महानतम विश्वविद्यालयों जैसे– तक्षशिला विश्वविद्यालय और विक्रमशिला विश्वविद्यालयों की शैक्षिक व्यवस्थाओं को जो कि वर्तमान में प्रासंगिक हैं और उनका अनुसरण करने की महती आवश्यकता है।

अतः उपरोक्त तथ्यों को ध्यानगत रखते हुए शोधार्थी ने पतंजलि विश्वविद्यालय हरिद्वार पर अध्ययन करने का निश्चय किया है।

शोध समस्या–

पतंजलि विश्वविद्यालय हरिद्वार : एक व्यष्टि अध्ययन।

अध्ययन का उद्देश्य–

प्रस्तावित शोध अध्ययन में निम्नलिखित उद्देश्यों का अध्ययन किया जायेगा–

1. पतंजलि विश्वविद्यालय की स्थापना के उद्देश्यों का अध्ययन करना।
2. पतंजलि विश्वविद्यालय से सम्बद्ध भारत में अन्य स्थानों पर स्थापित संस्थानों का अध्ययन करना।
3. पतंजलि विश्वविद्यालय के शैक्षिक प्रबन्धन का अध्ययन का करना।
4. पतंजलि विश्वविद्यालय में दी जा रही शिक्षा (पाठ्यक्रमों) का अध्ययन करना।
5. पतंजलि विश्वविद्यालय के शिक्षा पद्धति एवं शिक्षण विधियों का अध्ययन करना।
6. पतंजलि विश्वविद्यालय की स्थापना के उद्देश्यों, पाठ्यक्रमों, शिक्षा पद्धति एवं शिक्षण विधियों का वर्तमान में प्रासंगिकता का अध्ययन करना।

अध्ययन के मुख्य बिन्दु

शोध एक विस्तृत ज्ञानात्मक प्रक्रिया है। शोध न तो एकांकी हो सकता है और न तो समस्या को एक साथ लेकर ही किया जा सकता है। अतः वर्तमान आवश्यकता एवं सुविधा को ध्यान में रखकर शोधकर्ता निम्नलिखित बिन्दुओं पर अध्ययन करके अपने शोध का क्षेत्र बनाया है–

1. पतंजलि विश्वविद्यालय की स्थापना की आवश्यकता तथा उनके योग शिक्षा में योगदान को विशेष ध्यान दिया गया है।
2. पतंजलि विश्वविद्यालय शिक्षा के विभिन्न स्तरों पर पाठ्यक्रम एवं उसके क्या उद्देश्य है?

3. पतंजलि विश्वविद्यालय के शैक्षिक प्रबन्धन की स्थिति एवं दी जा रही शिक्षा का वर्तमान में महत्त्व है?
4. भारतीय राष्ट्रीय परिप्रेक्ष्य में पतंजलि विश्वविद्यालय के उद्देश्यों एवं आदर्शों की उपयोगिता पर विचार प्रस्तुत किया जायेगा। यथासम्भव उनके द्वारा उद्गारित शिक्षा में योगदान को वर्तमान शिक्षा के धरातल पर परखने का प्रयास किया जायेगा।

सम्बन्धित साहित्य का सर्वेक्षण–

मिश्रा, दिव्या (1996) ने नालन्दा विश्वविद्यालय की शैक्षिक व्यवस्था की विवेचना पर पर अध्ययन किया। निष्कर्ष रूप में इंगित किया कि नालन्दा विश्वविद्यालय में शिक्षा का केन्द्र बिन्दु विद्यार्थी माना जाता था। अतः उनके लिए उच्चतम मर्यादा प्रतिपादित की गयी थी, जिससे छात्रों में नैतिक, बौद्धिक, आध्यात्मिक मूल्यों का संचरण होता था और छात्र इन मूल्यों को ग्रहण करके आने जीवन के चरमोत्कर्ष को प्राप्त होता था, जो वर्तमान छात्रों के लिए भी उपयोगी था। नालन्दा विश्वविद्यालय मूल रूप से महायान सम्प्रदाय की शिक्षा का केन्द्र था, किन्तु इस संस्था में वेद, तर्कशास्त्र, आयुर्वेद, अथर्वविद्या और सांख्यदर्शन की शिक्षा का भी उचित प्रबन्ध था। नालन्दा विश्वविद्यालय की शिक्षा व्यवस्था में कक्षाओं का आकार छोटा होता था एक आचार्य के निर्देशन में 9 या 10 छात्र ही रहते थे। इसलिए गुरू प्रत्येक विद्यार्थी पर ध्यान देता था। अतः छोटी कक्षाएं व्यस्त दिनचर्या, व्यक्तिगत ध्यान जैसे– शिक्षा सिद्धान्त आज के शैक्षिक परिवेश में भी प्रासंगिक एवं उपादेय है।

सिंह, डॉ0 विनय कुमार (2006), योग शिक्षा तथा योग के संदर्भ में बाबा रामदेव जी के विचारों का अध्ययन इन्होंने अपने लघु शोध प्रबन्ध में योग शिक्षा तथा योग के संदर्भ में बाबा रामदेव जी के विचारों पर प्रकाश डाला है। योग पर किये गये इनके इस कार्य को अत्यन्त सराहना मिली।

रंगन एवं अन्य (2009) के अध्ययन का उद्देश्य निरन्तर एकाग्रता के विकास पर आधुनिक एवं गुरुकुल शिक्षण व्यवस्था के प्रभाव का तुलनात्मक अध्ययन करना था। न्यादर्श के रूप में 49 बालक (11–13 वर्ष) का चयन दो आवासीय विद्यालयों (आधुनिक शिक्षण पद्धति एवं गुरुकुल शिक्षण पद्धति) से किया गया जिनमें समान वातावरण एवं दिनचर्या थी। बालकों की आयु एवं सामाजिक आर्थिक स्तर के सन्दर्भ में समरूपता रखी गई। गुरुकुल शिक्षण पद्धति यौगिक क्रियाओं पर आधारित शिक्षण कार्यक्रम है,

जबकि आधुनिक शिक्षण पद्धति पारम्परिक शिक्षण पद्धति है। शिक्षण सत्र के प्रारम्भ एवं अन्त में निरन्तर एकाग्रता का आंकलन एस.एल.सी.टी. द्वारा किया गया। अध्ययन के परिणामस्वरूप पाया गया कि समूह में पूर्व व पश्च परीक्षण में सार्थक अन्तर पाया गया जबकि समूहों के बीच गुरुकुल शिक्षण पद्धति समूह में आधुनिक शिक्षण पद्धति समूह की तुलना में सुधार पाया गया। प्रस्तुत अध्ययन के परिणाम बताते हैं कि दोनों ही शिक्षण पद्धति बालकों में निरन्तर एकाग्रता में वृद्धि लाते हैं परन्तु गुरुकुल शिक्षण पद्धति अधिक रूप से प्रभावी पायी गई।

पाल, अरूण कुमार (2013), ने पतंजलि के योगदर्शन की वर्तमान शिक्षा में प्रासंगिकता का अध्ययन किया एवं निष्कर्ष में पाया कि– महर्षि पतंजलि के सम्पूर्ण शैक्षिक विचारों का अध्ययन करने के बाद यह पाया कि वास्तव में शिक्षा के प्रयासों को मात्र एक भौतिक प्रगति तक ही सीमित न रखकर आध्यात्मिक विचारों से भी जोड़ना होगा जिससे मनुष्य का सर्वांगीण विकास हो सके, जिसका कि आज शीघ्रता से पतन होता जा रहा है।

कोठारी, अतुल (2013) ने **राष्ट्रीय स्वायत्ता शिक्षा संस्थान – प्रारूप** पर अध्ययन किया। निष्कर्ष रूप में इंगित किया कि देश की वर्तमान शिक्षा में जो विकृत स्वरूप उभरकर सामने आ रहा है उसका मूल कारण हमारी शिक्षा का स्वरूप राष्ट्र के चिति के प्रकाश में न होना है। **यूनेस्को के डेलर्स रिपोर्ट** में भी कहा है कि किसी भी देश की शिक्षा का स्वरूप उस देश की संस्कृति के अनुरूप होना चाहिए। देश की संस्कृति का विकास चित्त के प्रकाश में ही होता है। विश्वविद्यालय के विभिन्न विभागों, महाविद्यालयों एवं शिक्षकों तथा छात्रों को स्वायत्तता मिलनी चाहिए। विश्वविश्वविद्यालय को प्रशासन एवं आर्थिक संस्थानों से स्वायत्तता मिलनी चाहिए। राजनीति एवं बाजार के दबाव से भी शिक्षा मुक्त होनी चाहिए।

शर्ली टेल्स, आरती यादव, अभिषेक कुमार भारद्वाज, सचिन कुमार शर्मा, नीलकमल सिंह, (2013) पतंजलि योगपीठ, हरिद्वारः एक आयुर्वेद केंद्र जिसमें उपचार, अनुसंधान और शिक्षा शामिल है। सकारात्मक स्वास्थ्य को बढ़ावा देने, बीमारी को रोकने और एक बीमारी के प्रबंधन में उपचार के प्राचीन तरीकों को तेजी से स्वीकृति मिल रही है। जो मौजूद है. पतंजलि योगपीठ, जिसका उद्घाटन 2006 में हुआ था, उत्तर भारत के हरिद्वार में स्थित है। इसकी स्थापना स्वामी रामदेव और आचार्य बालकृष्ण ने की थी। ट्रस्ट का लक्ष्य स्वास्थ्य संवर्धन और उपचार के तरीकों के रूप में योग और

आयुर्वेद का प्रचार–प्रसार बढ़ाना है। संस्थान में योग गतिविधियों की एक विस्तृत श्रृंखला है जिसमें स्वस्थ व्यक्तियों और रोगियों के लिए संस्थान के बाहर और भीतर शिविरों के रूप में आयोजित योग कक्षाएं शामिल हैं, साथ ही कक्षाओं के टेलीविजन प्रसारण भी शामिल हैं; संस्थान में योग कक्षाएं जो प्रतिदिन प्रशिक्षित शिक्षकों द्वारा निःशुल्क आयोजित की जाती हैं; विश्वविद्यालय द्वारा संचालित योग पाठ्यक्रम; योग पर अनुसंधान और पुस्तकों, अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलनों, सेमिनारों और एक मासिक पत्रिका के माध्यम से ज्ञान का प्रसार आयुर्वेद गतिविधियाँ समान हैं और इसमें (1) अनुसंधान, (2) उपचार, (3) शिक्षा, (4) आयुर्वेद दवाओं का निर्माण और वितरण, और शामिल हैं। (5) हर्बल औषधीय पौधों का एक विश्वकोश संकलित करना। इनमें से प्रत्येक गतिविधि का संक्षेप में नीचे वर्णन किया जाएगा।

रंजन, राजीव, सिंह, सुजय विक्रम, शेखर, हिमांशु एवं चौहान, वैभव कुमार (2022) ने उत्तराखंड में योग पर्यटन को प्रभावित करने वाले कारकः पतंजलि योगपीठ का एक केस स्टडी पर अध्ययन किया। अध्ययन के निष्कर्ष में पाया कि– स्वास्थ्य और कल्याण हमेशा पर्यटन उद्योग का प्रमुख फोकस रहा है और पर्यटकों के शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य को पूरा करता है। योग भारत की स्वदेशी चिकित्सा है जिसका जन्म और पालन–पोषण दुनिया भर में हुआ और यह आगंतुकों को अनुभव के लिए आकर्षित करती है। भारत योग का केंद्र होने के कारण कई प्रकार के गंतव्य प्रदान करता है, लेकिन भौगोलिक स्थिति और प्राकृतिक परिदृश्य उत्तराखंड का अद्वितीय विक्रय बिंदु (यूएसपी) हैं, जो हिमालय श्रृंखला की निकटता और पतंजलि योगपीठ और उनके संस्थापक बाबा रामदेव की विश्वसनीयता के कारण बहुत प्रमुख है। विश्व ने उत्तराखंड को योग गंतव्य के लिए आकर्षक बनाया है। वर्तमान शोध उन कारकों पर केंद्रित है जो पर्यटकों को योग के उद्देश्य से पतंजलि योगपीठ, उत्तराखंड आने के लिए प्रभावित करते हैं। अध्ययन में 318 उत्तरदाताओं का डेटा एकत्र करने के लिए सर्वेक्षण का उपयोग करते हुए सकारात्मकता–निगमनात्मक अनुसंधान दृष्टिकोण, एक मात्रात्मक पद्धति का उपयोग किया गया। निष्कर्षों ने योग पर्यटन स्थल के रूप में योगपीठ के विकास के लिए जिम्मेदार चार महत्वपूर्ण कारकों को निर्धारित किया और आयु समूह और व्यवसाय की भूमिका को महत्वपूर्ण कारकों के रूप में सुझाया जो लोगों को "योग पर्यटन" के लिए आकर्षित करते हैं। अध्ययन में डीएमओ और ट्रैवल एजेंसियों को आयु समूहों, व्यवसाय स्तरों के अनुसार अपने विपणन विभाजन और लक्ष्यीकरण रणनीतियों

पर ध्यान केंद्रित करने और शिक्षाविदों को योग पर्यटन को बढ़ावा देने के लिए पर्यावरण, विज्ञापन और संस्कृति की भूमिका का पता लगाने की सलाह दी गई है।

शोध प्रविधि

शोध शीर्षक से संबंधित प्राथमिक एवं द्वितीयक स्त्रोतों पर यह शोध आधारित होगा। जिसके विभिन्न प्रकार के मूल ग्रंथ टीकायें विभिन्न विद्वानों की मौलिक पुस्तकं अभिलेखों तथा संग्रहालयों में उपलब्ध सामाग्री के आधार पर शोध शीर्षक की विषय वस्तु के अध्ययन की विभिन्न पद्धतियों के प्रकाश में अध्ययन करने का प्रयास किया जाएगा। अतः शोधार्थी द्वारा विवरणात्मक अनुसंधान विधि का प्रयोग किया जायेगा।

सूचना प्राप्ति के स्रोत–

अनुसंधान हेतु आवश्यक सूचनाएँ दो प्रमुख स्रोतों से प्राप्त की जायेगी।

प्राथमिक स्रोत–

ये साधन किसी घटना व्यक्ति या संस्था के विषय में प्रथम साक्षी का कार्य करते है। ये साधन घटना से तात्कालिक सम्बन्ध रखते हैं।

- रामदेव, स्वामी, ''योग साधना एवं चिकित्सा रहस्य'', दिव्य प्रकाशन, दिव्य योग मन्दिर ट्रस्ट, हरिद्वार, 2005।
- रामदेव; ''योग साधन'', दिव्य प्रकाशन, पतंजलि योग पीठ, हरिद्वार, 2004।
- रामदेव; ''विज्ञान की कसौटी पर योग'', दिव्य प्रकाशन, दिव्य योग मन्दिर, हरिद्वार 2007।
- रामदेव ;''प्राणायाम रहस्य'' (वैज्ञानिक तथ्यों के साथ) दिव्य प्रकाशन, पतंजलि योग पीठ, हरिद्वार 2009।
- स्वामी रामदेव जी, ''जीवनदर्शन'', दिव्य प्रकाशन, दिव्य योग मन्दिर ट्रस्ट हरिद्वार।
- स्वामी रामदेव जी, ''गीता रहस्य'', दिव्य प्रकाशन, दिव्य योग मन्दिर ट्रस्ट हरिद्वार।
- स्वामी रामदेव जी, ''योग शैक्षिक पाठ्यक्रम'', दिव्य प्रकाशन, दिव्य योग मन्दिर ट्रस्ट हरिद्वार।
- स्वामी रामदेव जी– महर्षि पतंजलि योगशास्त्र–दिव्य प्रकाशन, दिव्य योग मन्दिर ट्रस्ट हरिद्वार

द्वितीयक स्रोत–

द्वितीयक स्रोत के रूप में पतंजलि विश्वविद्यालय, हरिद्वार से सम्बन्धित अन्य लेखकों के समीक्षात्मक ग्रन्थों, लेखों अध्येताओं द्वारा लिखी गयी पुस्तकों प्रबन्धों का अध्ययन किया जायेगा।

पतंजलि विश्वविद्यालय हरिद्वार : एक व्यष्टि अध्ययन

शोध की रूपरेखा

1. प्रस्तावना

1.1 भूमिका

1.2 अध्ययन की आवश्यकता एवं महत्त्व

1.3 शोध कथन

1.4 समस्या का परिभाषीकरण

1.5 अध्ययन का उद्‌देश्य

1.6 अध्ययन की सीमाएं

1.7 सम्बन्धित साहित्य का अध्ययन

2 पतंजलि विश्वविद्यालय हरिद्वार : एक परिचय

2.1 पतंजलि विश्वविद्यालय एक परिचय

2.2 पतंजलि विश्वविद्यालय का भौगोलिक परिचय

2.3 पतंजलि विश्वविद्यालय का ऐतिहासिक और राजनीतिक परिचय

3. पतंजलि विश्वविद्यालय की शिक्षा–व्यवस्था

3.1 तत्कालीन शिक्षा व्यवस्था का सामान्य परिचय

3.2 विश्वविद्यालय में सामान्य शिक्षा व्यवस्था

3.3 शिक्षा के उद्‌देश्य (सामान्य एवं उच्च शिक्षा के सम्बन्ध में)

- सामान्य शिक्षा के सम्बन्ध में उद्‌देश्य
- उच्च शिक्षा के सम्बन्ध में उद्‌देश्य

3.4 प्रवेश प्रक्रिया

3.5 शिक्षण विधि

3.6 पाठ्यक्रम

3.7 शिक्षक–शिक्षार्थी सम्बन्ध

3.8 अनुशासन

3.9 वित्तीय व्यवस्था

3.10 छात्रवृत्ति

3.11 विषय चयन की स्वतंत्रता

4. पतंजलि विश्वविद्यालय की शिक्षा– व्यवस्था की विशिष्टिताएं

5. पतंजलि विश्वविद्यालय की शिक्षा–व्यवस्था की वर्तमान में प्रासंगिकता

6. निष्कर्ष

भावी अनुसंधान हेतु सुझाव

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

- कटारिया, सुरेन्द्र ; "प्रशासनिक सिद्धान्त एवं प्रबन्ध", नेशनल पब्लिशिंग हाउस, जयपुर, 2009।
- कोठारी, अतुल (2013). राष्ट्रीय स्वायत्ता शिक्षा संस्थान – प्रारूप, IJEIE, Indian Journal of Experimentation and Innovation in Education, Vol. 2, Issue 6, Nov. 2013
- सिंह, डॉ0 विनय कुमार (2006), योग शिक्षा तथा योग के संदर्भ में बाबा रामदेव जी के विचारों का अध्ययन पूनाः पूना विश्वविद्यालय।
- पाल, अरबिन्द कुमार (2012), सांख्य योग दर्शन का शिक्षा में योगदान, लघु शोध प्रबन्ध (एम0एड0), कानपुरः कानपुर विश्वविद्यालय।
- रंजन, राजीव, सिंह, सुजय विक्रम, शेखर, हिमांशु एवं चौहान, वैभव कुमार (2022). फैक्टर इन्फ्लुएन्स योगा टूरिज्म इन उत्तरखण्ड : ए केश स्टडी ऑफ पातंजलि योगपीठ, इण्टरनेशनल जर्नल ऑफ ट्रेण्ड इन सांइटिफिक रिसर्च एण्ड डेवेलपमेण्ट, वॉ0 6, इश्शू–2, पृ0 292–298
- शर्ली टेल्स, आरती यादव, अभिषेक कुमार भारद्वाज, सचिन कुमार शर्मा, नीलकमल सिंह, (2013) पतंजलि योगपीठ, हरिद्वारः एक आयुर्वेद केंद्र, जर्नल ऑफ आयुर्वेद एण्ड इंटिग्रिटी मेडशिन, वॉ0 4, इश्शू–4, पृ0 120
- Rangan, R., Nagendra, H.R. Ramachandra, Bhatt (2009). Effect of Yogic Education System and Modern Education System on Sustained Attention. International Journal of Yoga., Vol. 2, No. 1, pp. 35.

DrillBit

The Report is Generated by DrillBit Plagiarism Detection Software

Selected Language Hindi

Submission Information

Author Name	Kamlakant Tripathi
Title	Patanjali Vishwavidyalaya Haridwar: Ek Vyasti Addyan
Paper/Submission ID	3587595
Submitted by	rjmauryauprtou@gmail.com
Submission Date	2025-05-07 11:54:42
Document type	Synopsis

Result Information

Similarity	**2%**

A Unique QR Code use to View/Download/Share Pdf File

DrillBit

DrillBit Similarity Report

2	1	A	A-Satisfactory (0-10%) B-Upgrade (11-40%) C-Poor (41-60%) D-Unacceptable (61-100%)
SIMILARITY %	MATCHED SOURCES	GRADE	

LOCATION	MATCHED DOMAIN	%	SOURCE TYPE
1	Thesis Submitted to Shodhganga, shodhganga.inflibnet.ac.in	2	Publication